

पंडित यमुना प्रसाद त्रिपाठी

जीवन परिचय-शिक्षा एवं योग्यता

जन्म एवं प्रारंभिक जीवन

संपर्क 9971719200

पवित्र चित्रकूट धाम की पुण्य भूमि में जन्म लेना अपने आप में एक महान सौभाग्य है। यह वही पावन स्थान है जहाँ भगवान श्रीराम ने अपने वनवास काल का अधिकांश समय व्यतीत किया था। माता सीता और लक्ष्मण जी के साथ प्रभु श्रीराम ने इस पवित्र धरा को अपनी दिव्य उपस्थिति से धन्य किया था।

कामदगिरि की महिमा

चित्रकूट की कामदगिरि पर्वत की परिक्रमा को समस्त सनातनी अपना परम सौभाग्य मानते हैं। यह पर्वत सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला माना जाता है। इस पवित्र पर्वत की परिक्रमा से जो पुण्य प्राप्त होता है, उसे अनमोल खजाना माना गया है। इसी दिव्य वातावरण में जन्म लेना और पलना-बढ़ना निश्चित रूप से व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डालता है।

प्रारंभिक शिक्षा

संस्कृत विद्या की इस महान परंपरा के वाहक की शिक्षा का प्रारंभ इसी चित्रकूट की पावन भूमि से हुआ। चित्रकूट से प्राप्त संस्कारों ने इनके व्यक्तित्व की आधारशिला रखी। यह पवित्र स्थान न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में भी अपना विशेष स्थान रखता है।

उच्च शिक्षा

प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात, संस्कृत विद्या की गहरी समझ प्राप्त करने हेतु सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से शिक्षा प्राप्त की। इस प्राचीन विश्वविद्यालय से पूर्व मध्यमा एवं उत्तर मध्यमा की उपाधियाँ प्राप्त कीं। वाराणसी की यह संस्था संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में अपनी उत्कृष्टता के लिए विश्वप्रसिद्ध है।

शास्त्री एवं आचार्य उपाधि

संस्कृत विद्या में और भी गहन अध्ययन के लिए समन्त भद्र संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री एवं आचार्य की प्रतिष्ठित उपाधियाँ प्राप्त कीं। ये उपाधियाँ संस्कृत साहित्य, दर्शन और धर्मशास्त्र में गहरी पांडित्य का प्रमाण हैं। विद्या की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए शास्त्रों में कहा गया है:

**विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्।
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः॥
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतम्।
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः॥**

अर्थ: विद्या ही मनुष्य का सच्चा रूप है, छिपा हुआ धन है। विद्या भोग देने वाली, यश और सुख देने वाली है। विद्या गुरुओं की भी गुरु है। विदेश में विद्या ही बंधु-बांधव है। विद्या परम देवता है। राजाओं में विद्या की पूजा होती है, धन की नहीं। विद्याविहीन व्यक्ति पशु के समान है।

विशेषज्ञता के क्षेत्र

कर्मकांड विशेषज्ञता

संस्कृत शास्त्रों के अतिरिक्त कर्मकांड पाठ्यक्रम की विशेष शिक्षा प्राप्त की है। कर्मकांड हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण अंग है जिसमें 16 संस्कारों और पूजा-पाठ की विधियों का वैज्ञानिक और शास्त्रसम्मत ज्ञान सम्मिलित है।

ज्योतिष आचार्य

ज्योतिष आचार्य की उपाधि भी प्राप्त है, जो भारतीय ज्योतिष विद्या में प्रवीणता का प्रतीक है। ज्योतिष शास्त्र का यह गहरा ज्ञान व्यक्तिगत मार्गदर्शन और भविष्य की घटनाओं के विश्लेषण में सहायक है।

सेवा के क्षेत्र -संस्कार एवं पूजा सेवाएँ

समस्त संस्कार पूजा के क्षेत्र में व्यापक अनुभव है। जन्म से मृत्यु तक के सभी सोलह संस्कारों का शास्त्रसम्मत संपादन करते हैं। इनमें नामकरण, अन्नप्राशन, उपनयन, विवाह, गृहप्रवेश आदि सभी महत्वपूर्ण संस्कार सम्मिलित हैं।

श्रीमद्भगवत कथा

भगवत कथा के माध्यम से श्रीमद्भागवत महापुराण के गूढ़ रहस्यों और भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का प्रवचन करते हैं। यह कथा आध्यात्मिक उन्नति और मोक्ष प्राप्ति का माध्यम मानी जाती है।

श्री राम कथा

श्री राम कथा के द्वारा रामायण के मर्म और भगवान श्रीराम के आदर्श चरित्र का विवेचन करते हैं। यह कथा धर्म, न्याय और आदर्श जीवन के सिद्धांतों को स्थापित करती है।

कथा और धर्मप्रचार की महिमा के संदर्भ में शास्त्रों में वर्णित है:

धर्मप्रवचने युक्तः सदा स्यान्मतिमान्नरः।

एतस्मिन्खलु लोकेऽस्मिन्धर्मो हि परमं बलम्॥

अर्थ: बुद्धिमान व्यक्ति को सदैव धर्म के प्रवचन में लगे रहना चाहिए। इस संसार में धर्म ही परम बल है।

व्यक्तित्व का महत्व

यह विद्वान व्यक्तित्व पारंपरिक संस्कृत शिक्षा और आधुनिक समझ का एक उत्कृष्ट संयोजन है। चित्रकूट की पावनता, वाराणसी की विद्वत्ता और व्यापक शास्त्रीय ज्ञान के साथ, ये समाज में धर्म और संस्कृति के संरक्षण एवं प्रसार का महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं।

इनकी शिक्षा और अनुभव का यह संयोजन न केवल व्यक्तिगत आध्यात्मिक विकास में सहायक है, बल्कि समाज के सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। कर्मकांड से लेकर कथा-प्रवचन तक

की व्यापक सेवाओं के माध्यम से, ये हिंदू धर्म और संस्कृति की समृद्ध परंपरा को आगे बढ़ाने का पुनीत कार्य कर रहे हैं।